Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 9.134
Volume - 9, Issue - 1, January - 2026

DOIs:10.2018/SS/202601003 --:-- Research Paper / Article / Review

'नवयुग': संघर्ष से सृजन तक - एक साहित्यिक चेतना का पुनर्जन्म

डेनियल राजेश

शोधार्थी, हिन्दी विभाग, अण्णामलै विश्वविद्यालय, अण्णामलै नगर – 608 002.

ई॰मेल॰ jdanielrajesh@gmail.com

डॉ.एल.तिल्लै सेल्वी

आचार्या, हिन्दी विभाग, अण्णामलै विश्वविद्यालय, अण्णामलै नगर – 608 002.

ई॰मेल॰ thillaiselvi20@gmail.com

शोध सार: साहित्य और समाज एक-दूसरे से अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। साहित्य समाज का प्रतिबिंब होता है और समाज के कल्याण में सहायक सिद्ध होता है। हिंदी कहानी विधा में साहित्य की विशेष भूमिका रही है। हिंदी साहित्य के आकाश में अनेक कहानीकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से इस विधा को समृद्ध किया है। इन्हीं में से एक हैं प्रसिद्ध कहानीकार तेजेन्द्र शर्मा, जिन्होंने हिंदी कहानी साहित्य में महत्वपूर्ण और बेजोड़ योगदान दिया है। तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'नवयुग' एक मार्मिक रचना है, जो साहित्यिक संसार की कड़वी सच्चाइयों, एक लेखक के संघर्ष, प्रतिष्ठा की होड़ और आत्म-परिवर्तन को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। 'नवयुग' आत्म-मंथन और नैतिक मूल्यों पर पुनर्विचार के लिए प्रेरित करती है।

मूल शब्द: नवयुग, संघर्ष, सृजन, साहित्यिक चेतना, पुनर्जन्म ।

1. आमुख:

तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'नवयुग' साहित्यिक जगत की कटु वास्तविकताओं और एक गहरे मनोवैज्ञानिक द्वंद्व का सजीव चित्रण करती है। यह कहानी कैलाशनाथ मोहला के संघर्ष को दर्शाती है, जो एक प्रसिद्ध साहित्यकार का पौत्र होने के बावजूद अपनी रचनाओं को प्रकाशित कराने में असफल रहता है। यह विफलता उसे निराशा के ऐसे चरम पर धकेल देती है, जहाँ वह अपनी ही कृतियों को जलाने का कठोर निर्णय ले लेता है।

इस कहानी के माध्यम से, तेजेंद्र शर्मा ने कैलाशनाथ जैसे साधारण लेखक की आवाज़ उठाई है, जो उन हजारों लेखकों का प्रतिनिधित्व करता है जिन्हें स्थापित साहित्यिक संस्थानों और संपादकों की उपेक्षा का सामना करना पड़ता है।

2. साहित्यिक चेतना का अर्थ:

साहित्यिक चेतना का अर्थ है कि "साहित्यकार अपने समय और समाज की समस्याओं, चुनौतियों और विचारों के प्रति जागरूक होते हैं और इन विचारों को अपने साहित्य में व्यक्त करते हैं।"[1] यह साहित्य में सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, और व्यक्तिगत चेतना का समावेश है।

3. 'नवयुग' कहानी का सारांश:

तेजेन्द्र शर्मा द्वारा लिखित 'नवयुग' कहानी एक संघर्षशील लेखक कैलाशनाथ की है जो पन्द्रह वर्षों से साहित्य सृजन कर रहा है, परंतु उसकी कोई भी रचना प्रकाशित नहीं होती। निराशा में वह अपनी रचनाओं को जलाने का निर्णय लेता है। तभी उसका मित्र देवेश उसे एक नया मंच 'नवयुग' नामक पत्रिका शुरू करने का प्रस्ताव देता है। पत्रिका सफल होती है, लेकिन सफलता कैलाशनाथ को उसी व्यवस्था का हिस्सा बना देती है जिससे वह कभी नफरत करता था। अंततः, देवेश उसे उसकी पुरानी अस्वीकृत कहानी के माध्यम से उसका आत्मदर्पण दिखाता है।

कैलाशनाथ के संघर्ष और असफलता का दर्द:

कैलाशनाथ पंद्रह वर्षों से लेखन में लीन है, कहानी, कविता, उपन्यास, सब कुछ लिख चुका है। उसकी रचनाएँ उसे 'छपी हुई रचनाओं से इक्कीस ही' लगती हैं, फिर भी कोई पत्रिका या प्रकाशक उन्हें छापने को तैयार नहीं। यह अस्वीकृति उसे गहन पीड़ा देती है। वह कहता है:

"उसकी 15 वर्ष की मेहनत आज तक बेकार ही जाती रही है। इस बीच कितना लिखा है उसने। कहानी, कविता, उपन्यास सब कुछ ही तो लिखा है, किन्तु क्या कारण है कि कोई भी पत्रिका या प्रकाशक उसका लिखा कुछ भी छापने को तैयार नहीं होता।"[2]

ये पंक्तियाँ कहानी के नायक कैलाशनाथ की भावनात्मक गहराई को उद्घाटित करती है।

उसकी निराशा इस हद तक बढ़ जाती है कि वह अपनी कृतियों को जलाकर राख करने का फैसला कर लेता है:

"कैलाशनाथ ने आज तय कर लिया था कि सब कुछ अपने ही हाथों जलाकर राख कर देगा। कम-से-कम उसे इस बात का तो सन्तोष रहेगा कि उसने संसार को अपनी भावनाओं से खिलवाड़ नहीं करने दिया।"[3]

लेखन के प्रति उसका प्रारंभिक उत्साह, समाज में क्रांति लाने और कुरीतियों को बदलने का सपना, इस कड़वी सच्चाई के सामने धूमिल पड़ जाता है:

"जब लिखना शुरू किया था तो सोचा था, समाज में एक क्रान्ति ला दूँगा। बदल डालूँगा समाज की कुरीतियों को। आग लगा दूँगा समाज में फैले हुए भ्रष्टाचार को, और पन्द्रह वर्ष बाद अपनी ही रचनाओं को आग लगाने को तैयार बैठा है!"[4]

स्वाभिमान बनाम व्यावसायिकता:

कैलाशनाथ अपने साहित्यिक स्वाभिमान को बनाए रखने के लिए संघर्ष करता है। वह 'घोस्ट राइटर' बनने या केवल व्यावसायिक सत्य कथाएँ लिखने से इनकार करता है, क्योंकि यह उसके रक्त में घुली हुई प्रतिबद्धता के विपरीत है:

"कई बार उसने सोचा भी कि वह भी सत्य कथाएँ लिखने लगे। क्या रखा है साहित्यिक लेखन में? या क्यों नहीं वह भी लेखकों का भूत बन जाता है, और भी तो कई लेखक स्थापित लेखकों के लिए 'घोस्ट' बन

कर लिखते हैं, किन्तु स्वाभिमान सदा ही आड़े आ जाता है। पण्डित मैयादास जैसे जाने-माने साहित्यकार का पौत्र यह सब स्वीकार करे तो कैसे। उसके तो रक्त में प्रतिबद्धता दूँस-ठूँस कर भरी है।"[5]

यह कहानी साहित्यिक जगत की एक कड़वी विडंबना को भी उजागर करती है:

"अजीब विडम्बना है। कुछ लोग बिकाऊ लेखन करके धनवान हो जाते हैं, तो कुछ लोग अच्छा लिखा हुआ छपवाने के लिए बिक जाते हैं।"[6]

भटनागर जी का कटु अनुभव:

कैलाशनाथ अपने नए उपन्यास पर किसी स्थापित लेखक से टिप्पणी या आशीर्वाद लेने की सोचता है और भटनागर जी से मिलने का फैसला करता है। भटनागर जी एक बड़े अधिकारी और जाने-माने लेखक हैं। कैलाशनाथ, जो भटनागर जी के ही दफ्तर में क्लर्क है, बहुत मुश्किल से उनसे मिल पाता है। वे कैलाशनाथ को अपनी सारी रचनाएँ जलाने और नए सिरे से पुराने लेखकों को पढ़कर लिखने की सलाह देते हैं, बिना उसकी पांडुलिपि को देखे ही:

"देखो मोहला, जब मैंने लिखना शुरू किया था तो लगभग छः सौ पृष्ठ लिखने के बाद वर्मा जी से सम्पर्क किया। बिलकुल वैसे ही जैसे आज तुम मेरे पास आए हो। वर्मा जी ने मेरी रचनाएँ पढ़ीं और कहा इन सबको आग लगा दो।"[7]

कैलाशनाथ, अपनी रचना को 'पुत्र समान' मानता है और इस सलाह को मानने से इनकार कर देता है। उसका क्रोध फूट पड़ता है:

"भटनागर जी, आपकी रचनाएँ जलाने की सलाह वर्मा जी ने दी क्योंकि वे उन रचनाओं को पढ़ चुके होंगे और जानते होंगे कि वे रचनाएँ इसी काबिल हैं। फिर शायद आप में भी आत्म विश्वास की कमी रही होगी। मुझे विश्वास है अपनी लेखनी पर, अपनी मेहनत पर। मैंने यह उपन्यास रातों को जाग-जाग कर लिखा है। मेरे लिए यह पुत्र समान है। इसे लिखने में मुझे प्रजनन का सुख मिला है। मैं इसकी गलतियाँ तो सुधार सकता हूँ, इसको जिन्दा जला नहीं सकता।"[8]

वह भटनागर जी को चुनौती देता है:

"वैसे आपने मेरा उपन्यास नहीं देखा, चलिए अच्छी बात है, किन्तु मैंने आपको देख लिया, अच्छी तरह देख लिया।"[9]

देवेश का 'नवयुग' और कैलाशनाथ का कायापलट:

क्रोध और निराशा में कैलाशनाथ अपनी पांडुलिपियों को जलाने लगता है। तभी उसका मित्र देवेश वहाँ पहुँचता है और उसे रोकता है। कैलाशनाथ अपनी पीड़ा व्यक्त करता है कि उसने जीवन का बेहतरीन हिस्सा साहित्य-रचना में गँवा दिया, लेकिन कुछ भी प्रकाशित नहीं हुआ। देवेश उसे हिम्मत न हारने की सलाह देता है और कहता है कि किसी रचना का छपना या न छपना उसकी श्रेष्ठता का मापदंड नहीं है। वह, कैलाशनाथ की पीड़ा को समझते हुए, उसे एक नई पत्रिका, 'नवयुग' शुरू करने का सुझाव देता है, जिसका मुख्य उद्देश्य नए लेखकों को मंच प्रदान करना होगा। देवेश कहता है:

"तुम नए लेखकों के लिए एक नए युग का आरम्भ करो, कल सुबह ही दफ्तर आ जाना। इस विषय पर विस्तार से बात करेंगे।"[10]

यह प्रस्ताव कैलाशनाथ के लिए एक नया जीवन लेकर आता है। वह सम्पादक बनकर अपने सपनों को पूरा करने की दिशा में कदम बढ़ाता है। वह 'नवयुग' के लिए जी-जान से जुट जाता है और दो महीने में

ही पत्रिका का प्रारूप तैयार कर लेता है। पत्रिका का पहला अंक निकालने में उसे 'प्रजनन का सुख' मिलता है। 'नवयुग' की सफलता के साथ, कैलाशनाथ की खुद की रचनाएँ भी प्रकाशित होने लगती हैं, और उसे सम्मान मिलना शुरू हो जाता है:

"सम्पादक बनते ही कैलाशनाथ की कहानियाँ और कविताएँ सभी छोटी-बड़ी पत्रिकाओं में छपने लगी थीं। अब किसी को भी उसके बिम्बों, प्रतीकों और सपाट बयानी से कोई शिकायत नहीं थी।"[11]

अब किसी को भी उसकी रचनाओं से कोई शिकायत नहीं होती और प्रकाशक उसके उपन्यास छापने को तैयार हो जाते हैं। 'नवयुग' का नाम सम्मान से लिया जाने लगता है और बड़े लेखक भी अपनी रचनाएँ वहाँ भेजने लगते हैं।

आत्म-विसर्जन और विरोधाभास:

कहानी का सबसे मर्मस्पर्शी मोड़ तब आता है जब देवेश कैलाशनाथ को उसकी ही एक पुरानी कहानी, 'निर्माण', जो उसने सुरेश ठाकुर के नाम से भेजी थी, के बारे में पूछता है। कैलाशनाथ, अपनी बढ़ी हुई व्यस्तता और 'प्रतिष्ठित नामों' को छापने की व्यावसायिक आवश्यकता के कारण, उस कहानी से अनभिज्ञ रहता है। वह कहता है:

"देवेश, पत्रिका चलाने के लिए भावुकता काम नहीं आती। आज जबकि बड़े से बड़ा लेखक हमारी पत्रिका में छपने के लिए लालायित है तो नए लेखकों के लिए जगह ही कहाँ बचती है। पत्रिका बेचने के लिए प्रतिष्ठित नामों का छपना बहुत बावश्यक है। नहीं तो, हमें तो अपनी दुकान उठानी पड़ेगी। वैसे यह सुरेश ठाकुर है कौन?"[12]

देवेश तब कैलाशनाथ को उसकी खुद की सच्चाई का सामना कराता है:

"कैलाशनाथ, क्या तुम वही इन्सान हो जो कल तक सम्पादकों, बड़े लेखकों और प्रकाशकों की बुराई करते नहीं थकते थे कि वे लोग नए लेखकों को छपने का मौका नहीं देते। मेज़ की इस ओर तुम्हें नए लेखक की पीड़ा का ज्ञान था किन्तु उस ओर पहुँचते ही तुम्हारा दिमाग खराब हो गया। इतनी जल्दी बदल गए तुम।"[13]

देवेश का यह कथन कैलाशनाथ को स्तब्ध कर देता है:

"तुम जानना चाहते हो सुरेश ठाकुर कौन है? अरे तुम्हीं हो सुरेश ठाकुर और 'निर्माण' मैंने तुम्हारी ही एक पुरानी कहानी को नाम दिया था। तुम्हारी ही कहानी तुम तक पहुँचने का रास्ता नहीं खोज पाई।"[14]

देवेश कैलाशनाथ पर नए लेखकों की पीड़ा भूलने और एक 'भँवर' खड़ा करने का आरोप लगाता है, जिसमें नए लेखकों की रचनाएँ खो जाती हैं। देवेश यह कहकर चला जाता है कि कैलाशनाथ उसका मित्र कैलाशनाथ नहीं हो सकता। कैलाशनाथ शर्म से अपना सिर ऊपर नहीं उठा पाता, उसे अपने परिवर्तन का एहसास होता है।

यह प्रसंग कैलाशनाथ के आत्म-विसर्जन और उसके आदर्शों से भटकने को उजागर करता है। वह स्वयं उस व्यवस्था का हिस्सा बन जाता है, जिसकी वह कभी आलोचना करता था। कहानी कैलाशनाथ के लिए एक शर्मनाक आत्म-बोध पर समाप्त होती है, जो उसे अपनी पिछली और वर्तमान स्थिति के बीच के विरोधाभास को समझने पर मजबूर करती है।

4. निष्कर्ष:

तेजेन्द्र शर्मा की कहानी 'नवयुग' समकालीन हिंदी साहित्य में एक महत्वपूर्ण कृति है, जो लेखक के आत्मसंघर्ष और साहित्यिक परिवेश की जटिलताओं को दर्शाती है। यह कहानी बताती है कि कैसे एक रचनाकार सफलता की राह पर अपने मूल आदर्शों और मानवीय मूल्यों से भटक जाता है। 'नवयुग' साहित्यकारों, संपादकों और पाठकों को यह सोचने पर विवश करती है कि साहित्य का उद्देश्य केवल यश और प्रसिद्धि प्राप्त करना नहीं, बल्कि मानवीय मूल्यों, संवेदनाओं और सामाजिक उत्तरदायित्वों की पुनर्स्थापना भी है। संक्षेप में, 'नवयुग' केवल एक लेखक की व्यक्तिगत यात्रा नहीं, बल्कि यह साहित्यिक दुनिया के जटिल संबंधों, व्यक्तिगत विश्वासों और पेशेवर दबावों के बीच संघर्ष का गहरा चित्रण है। यह कहानी हमें यह विचार करने के लिए प्रेरित करती है कि सफलता की ओर बढ़ते हुए हम अपने मूल सिद्धांतों से समझौता कर लेते हैं, और हम वही कठिनाइयाँ दूसरों के सामने खड़ी कर देते हैं, जिनसे हम खुद गुजर चुके होते हैं।

संदर्भ सूची:

1. https://rb.gy/uwaptq
2. तेजेन्द्र शर्मा, सीधी रेखा की परतें (नवयुग), वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली, प्रथम संस्करण- 2009, पृ. 134
3. वही, पृ. 134
4. वही, पृ. 134
5. वही, पृ. 134
6. वही, पृ. 135
7. वही, पृ. 136
8. वही, पृ. 136
9. वही, पृ. 136
10. वही, पृ. 138
11. वही, पृ. 139
12. वही, पृ. 139
13. वही, पृ. 140
14. वही, पृ. 140